मंजीता की सच्चाई ने जीता मन

– आदर्श वीर भारद्वाज

मंजीता नगला कोयल में रहती है। जो एक सीधे, सरल स्वभाव की लड़की है। परंतु गलत बात पर जल्दी ही गुस्सा हो जाती है। वैसे किसी के साथ लड़ाई–झगड़ा नहीं करती। बच्चों ने उसका नाम चोरनी रखा है। उसे चोरनी कहकर चिढ़ाते हैं।

मंजीता गोबर उठाने, उपले बनाने, घर में गोबर फेरने, रोटी बनाने, झाड़ू लगाने में परफेक्ट है। मैंने उसे चूल्हे पर बिना चकला–बेलन के हाथ से रोटी बनाते हुए देखा है ।

मंजीता का एक कमरे का घर है। घर की दीवार ईंट की बनी है परंतु उन पर प्लास्टर नहीं हुआ है। बीच–बीच में दीवार में मोरी (छेद) भी है जो शायद मकान बनाते समय रह गए होंगे, जो अब तक भरे नहीं हैं। सामने खुला छोटा सा आंगन है जिसमें एक भैस बंधी रहती है। चूल्हा भी इसी आंगन में रखा रहता है। जिस के ऊपर बोरी की पल्ली बांध रखी है। जो जगह–जगह से फट हुई है। वह पल्ली धूप या बारिश से शायद ही बचाव कर पाती होगी। मंजीता पांच भाई–बहन है। मंजीता के पापा शराब पीते हैं। मां मजदूरी करती है। परंतु अब पैर की बीमारी के कारण काम पर नहीं जाती। आदेश भी मजदूरी करने जाता है।

इस घटना से 1 साल पहले की बात है मंजीता के भाई आदेश का प्रवेश कक्षा 6 में होना था। मंजीता के पापा आदेश को लेकर स्कूल में आए थे। हमने आदेश से बात की तो वह पढ़ना–लिखना या अक्षर पहचानना भी नहीं जानता था। बच्चों ने बताया कि इनकी आदत ठीक नहीं है। यह तो चोर है। उसके पूर्व स्कूल ने भी इस बात की पुष्टि की थी। इस कारण से आदेश को यह कहते हुए प्रवेश देने से मना कर दिया कि इसकी उम्र तो 14 वर्ष से अधिक है। आप इसे बड़े स्कूल में दाखिला कराइए।

अब एक साल बाद जुलाई 2019 में मेरा उन बच्चों के घर जाना हुआ जिन्होंने कक्षा 5 तो पास कर ली थी, परंतु कक्षा 6 में प्रवेश नहीं लिया था।

एक लड़की दोपहर में पल्ली की छाया में हाथ से पानी की रोटी (बिना सूखा आटा लगाए केवल पानी की मदद से रोटी बनाना) बना रही थी। मैंने उससे पूछा मंजीता कौन है? तो लड़की ने कहा मैं ही मंजीता हूं। मैंने कहा कल स्कूल में आकर कक्षा 6 में प्रवेश ले लेना। अगले दिन उसकी मां लंगड़ाते हुए उसे लेकर स्कूल में आई। मुझे तब पता लगा कि मंजीता तो आदेश की बहन है। जिन्होंने पहले स्कूल में चोरी भी की थी। (ऐसा हमें बताया गया था) परंतु मैं तो अनजाने में उसे स्कूल में प्रवेश के लिए कह आया था, इसीलिए मैं प्रवेश के लिए अपने साथियों से आग्रह करने लगा। जबकि मंजीता की स्थिति पढ़ने में अपने भाई से अलग नहीं थी। उसे भी न अक्षर की पहचान थी और ना ही संख्या की पहचान थी। जबकि व्यावहारिक समझ उसकी ठीक थी। मंजीता को सशर्त प्रवेश दे दिया गया कि पहले हफ्ते इसका व्यवहार देखेंगे। फिर प्रवेश देंगे। मैंने कहा मंजीता तुम कल

स्कूल में स्कूल यूनीफॉर्म में और बैग लेकर आना।

मंजीता स्कूल लेट आई क्योंकि वह घर का सारा काम निपटाकर आई थी। संकोच के कारण वह स्कूल के गेट के बाहर ही खड़ी रही। बच्चों ने मुझे बताया कि मंजीता गेट के बाहर खड़ी है। मैं उसके पास गया और उसे कक्षा में चलकर बैठने के लिए कहा। वह कक्षा में सबसे पीछे की सीट पर बैठ गई। थोड़ी देर बाद मुझे कक्षा में चोरनी–चोरनी शब्द सुनाई दिया। मैंने बच्चों से पूछा ऐसा क्यों कर रहे हो? तो मंजीता के पास बैठी लड़की ने कहा गुरुजी इसकी कॉपी में पैसे हैं। यह चुरा कर लाई है। यह चोरनी है। इसने पिछले स्कूल में भी चोरी की थी। इसने पिछले स्कूल में भी मैडम के पर्स से पैसे चुराये थे। मैं दौड़कर मंजीता के पास गया, तो कॉपी में 500–500 के 4 नोट थे। मैंने वह पैसे ले लिये और उससे पूछा यह पैसे कहां से लाई? उसने कहा घर से लाई।

अब मैं सोचने लगा कि मैंने इसका स्कूल में प्रवेश कराकर कहीं गलती तो नहीं की। मेरे साथी भी इसे प्रवेश देने के लिए मना कर रहे थे। शायद उसकी यही वजह रही होगी मना करने की। अब मैं क्या करूं? मैंने यह घटना अपने साथी शिक्षक श्री सोरन सिंह जी को बताई। उन्होंने कहा हम तो आपसे पहले ही कह रहे थे कि इनका पढ़ने–लिखने से कोई मतलब नहीं है। मैंने कहा पिछला छोड़ो। इन 2000 रुपयों की सच्चाई तक कैसे पहुंचे यह सोचो। यह इसके पास कहां से आये? गुरुजी ने कहा यह इनके घर या मोहल्ले से ही पता लगेगा। इसके लिए इसके घर चलना चाहिए। हम दोनों मंजीता के घर के लिए चल दिए। रास्ते में गुरुजी ने कहा यह तो बताइए वहां बात क्या करेंगे? क्या कहेंगे? क्या पता पैसे घर से लिए या कहीं और से? हम सोच विचार करते हुए उनके घर पहुंच गए। उन्होंने हमारा आदर सत्कार किया और बैठने के लिए कुर्सी दी। गुरुजी चारपाई पर बैठ गये। परन्तु हम दोनों इस असमंजस में थे कि बात की शुरुआत कैसे करें?

फिर मैंने मंजीता की मां से कहा कि हम तो आपके पास एक बहुत जरूरी काम से आए हैं। उन्होंने कहा गुरुजी बताइए। मैंने कहा हमें 2 घंटे के लिए 2000 रुपये चाहिए थे। उन्होंने हमें कमरे के बाहर आने के लिए इशारा करते हुए कहा अजी बाहर बात करेंगे। 2000 रुपये तो हैं। मैं कल ही राजपाल जी से 2000 रुपये उधार लेकर आई हूं। मेरे आदमी को पता लग गया तो वह सारे पैसे की दारू पी जाएगा। मैंने पूछा पैसे उधार लिए हैं क्या आपको भी कोई जरूरी काम हैं? उन्होंने कहा मुझे अपने पैर की दवाई लाने के लिए डॉक्टर के यहां जाना है। इसके लिए ही पैसे उधार लिए हैं।

इससे एक बात तो तय हो गई थी कि मंजीता के पास जो पैसे हैं वो घर से ही गए हैं। पर सवाल यह था कि यह पता कैसे लगे कि उसने चोरी की है या नहीं। अगला सवाल था कि घर में इस घटना का राजदार कौन है? हमने दबाव बनाते हुए कहा कि हमें सिर्फ 2 घंटे के लिए चाहिए। जैसे ही बैंक खुलेगा हम बैंक से पैसे लाकर आपके पैसे वापस कर देंगे।

मंजीता की मां ने कहा जी आपका काम बहुत जरूरी होगा तभी तो आप उम्मीद लेकर हमारे पास आए हैं। उन्होंने कहा ठीक है। मैं देती हूं। आपका काम बहुत जरूरी है। पहले आप अपना काम कर लीजिए। मैं तो डॉक्टर के पास दवाई लेने कल भी चली जाऊंगी। वह घर में थैला ढूंढने लगी उसे थैला नहीं मिला। उसने कहा थैला तो मंजीता स्कूल में ले गई है और मैंने पैसे उसके पापा के डर की वजह से कॉपी में रख दिये थे। मैं आपके साथ स्कूल में चलती हूं, वहीं मंजीता से पैसे लेकर आपको दे दूंगी। इतना सुनते ही उस गरीब, और बीमार महिला के प्रति श्रद्धा में मेरे दोनों हाथ जुड़ गए। मेरे मुंह से तुरंत निकला कि आप वास्तव में बड़े दिल की नेक महिला है। मैंने 2000 रुपये उन्हें वापस देते हुए कहा कि अब आपके दोनों बच्चों मंजीता और आदेश का प्रवेश विद्यालय में होगा।

इसके बाद हम दोनों वापस स्कूल में आये। दोपहर में छुट्टी के समय सारे बच्चों के सामने यह घटना बताई और उनसे पूछा कि आप ही बताइए कि इस लड़की को आप क्या नाम देंगे? सभी ने कहा मंजीता।

(लेखक, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय नगला कोयल, नारसन, हरिद्वार में अध्यापक हैं)।

मुद्रक तथा प्रकाशक प्रदीप चन्द्र डिमरी द्वारा अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट, खसरा नम्बर 360 (ख), आमवाला तरला, देहरादून–248001 उत्तराखण्ड की ओर से प्रकाशित एवं शब्द संस्कृति प्रकाशन प्रा.लि., 117 चुक्खूवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड द्वारा मुद्रित।
सम्पादक : कैलाश चन्द्र काण्डपाल